BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 3, Issue 2, April-June, 2025
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

''वैदिक परंपरा में पर्यावरण संरक्षण''

डॉ0 आर0सी0 भट्ट
असिस्टेंट प्रोफेसर भूगोल
डॉ0 शिवानन्द नौटियाल राजकीय
स्नातकोत्तर महाविद्यालय कर्णप्रयाग (चमोली)

Abstract

प्राचीन भारतीय पारंपारिक ज्ञान पर्यावरणीय चेतना महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह समुदाय के सामाजिक और भौतिक वातावरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।। प्राचीन काल से ही भारतीय संस्कृति में पर्यावरण के अनेक घटकों जैसे वृक्षों को पूज्य मानकर उन्हें पूजा जाता है।। प्राचीन काल से पीपल, आंवला, तुलसी, आम, वट, केला, धतूरा आदि पेड पौधों की धार्मिक क्रिया कलापों में पूजा की जाती है। जल, वायु अग्नि और आकाश ग्रह नक्षत्रों पेड–पोधों को भी देव मानकर उनकी पूजा की जाती है। भारतीय पौराणिक कथाओं, वेदों पुराणों, उपनिषदों और हिन्दू धर्म के अन्य प्राचीन ग्रन्थों में पेड–पौधों वन्य जीवन और लोगों के लिए उनके महत्वपूर्ण विवरण दिया गया है।

हिन्दू धर्मो में वेदों उपनिषदों और अन्य प्राचीन ग्रन्थों में पेड पौधों और वन्य जीवन को बहुत महत्व प्रदान किया गया है, और मनुष्य जीवन के लिए भी उनका मूल्य बताये गये हैं। प्राचीन वेदों में पर्यावरण संरक्षण पारिस्थितिक संतुलन मौसम चक्र, वर्षा घटना, जल विज्ञान चक्र और संबन्धित विषयों के कई सन्दर्भ देखने को मिलते है। प्राचीन काल में ऋषि मुनियों ने हमारे चार वेदों में पर्यावरण संरक्षण के लिए महत्वपूर्ण स्थान दिया है, जिस कारण आज तक हमारे पर्यावरण में स्थिरता है।

वर्तमान में पर्यावरण संरक्षण वैश्विक स्तर पर ज्वलंत मुद्दा बन गया है। पर्यावरण को सुरक्षित एवं संरक्षित रखना संपूर्ण विश्व के लिए एक संयुक्त मुद्दा है। पर्यावरण का अर्थ है परि+ आवरण अर्थात हम जिससे चारों ओर से घिरे हैं। जिसमें जल मंडल, थल मंडल और वायु मंडल सम्मिलित है, अगर इनमें से कोई एक घटक भी असंतुलित होता है, तो पर्यावरण में भी असंतुलन उत्पन्न हो जाता है। पर्यावरण असंतुलन के कारण पृथ्वी धरातल पर भी असंतुलन उत्पन्न होने लगता है। यदि हम प्राचीन भारतीय संस्कृति में पर्यावरण संरक्षण की बात करे तो वैदिक काल से ही पर्यावरण संरक्षण की बात होती रही है। वेदों में कहा गया है कि मनुश्य का शरीर पृथ्वी, जल, अंतरिक्ष, अग्नि और वायु जैसे पा।च तत्वों से निर्मित है।। यदि इनमें से एक भी तत्व दूशित होता है तो इसका प्रभाव मानव जीवन पर अवश्य पडता है। यही कारण है कि प्राचीन काल से ही हमारे पूवजों ने प्रकति को देवी–देवताओं का स्थान दिया है, सूर्य, चन्द्रमा, अग्नि, वायु व नदियों को देवी–देवताओं के रुप में पूजा जाता था। पेड–पौधों और वनस्पतियों को औषधि के रुप में प्रयुक्त किया जाता था। पेडों जैसे पीपल, वटवृक्ष, केला, आम आज भी शादी–विवाह धार्मिक अवसरों पर पूजे जाते हैं। पेड़ को लगाना पुत्र प्राप्ति के समान माना गया है।

वैदिक समय में मानव जीवन के कल्याणार्थ पर्यावरण को स्वच्छ एवं सुन्दर बनाने की बात कही है। वेद में विविध सूक्तों (पृथ्वी सूक्त, अग्नि सूक्त, वरुण सूक्त, आपः सूक्त) के माध्यम से शुद्व हवा शुद्व भोजन पवित्र भूमि एवं शुद्व वातावरण में जीवन जीने की बात कही है। वैदिक पर्यावरण का अर्थ वेद में पर्यावरण सम्बन्धित बातों से है। वैदिक पर्यावरण के अर्थ को हम निम्नांकित बिन्दुओं के आधार पर समझ सकते हैं। निरोगी काया एवं दीर्घ आयु (दीघायु हेतु नित्य प्रणायाम) योग शुद्व हवा का सेवन करना, सात्विक भोजन ग्रहण करना, सात्विक विचार को अपने भीतर लाना, वृक्षारोपण समय–समय पर करते रहना, जड़ी बूटियों एवं गौ–घृत से आहुति देना।

@2025 Bihar Shodh Samaagam

वेदों में पर्यावरण संरक्षण हमारे वैदिक वाड्न्मय मे हमें पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रेरित किया गया है। पर्यावरण के प्रति प्रत्येक मानव को सचेत किया गया है। पर्यावरण के मूल घटक पंच तत्वों में देवत्य का भी दशग्न कराया गया है।

पंचतत्वों (पृथ्वी, जल, तेज वायु आकाश) को प्रदूषण रहित बनाने के लिए अनेक विद्वानों इनकी उपासना करके इनके संरक्षण के लिए मानव को प्रेरित किया है।

वैदिक साहित्य में वृक्ष वनस्पति संरक्षण हेतु पाप पुण्य और स्वर्ग नरक की अवधारणा से जोडकर तत्कालीन जन मानस को महत्वपूर्ण पर्यावरणीय घटक पेड पौधों की रक्षा के लिए प्रेरित किया है। तत्कालीन ऋषि– मुनि इस बात को जानते थे कि यदि वृक्ष वनस्पति पर्यावरण संरक्षण की अवधारणा को सुधारने की धारणा से जोड दिया जाये तो व्यक्ति आसानी से वृक्ष वनस्पति के सररक्षण हेतु जागृत होगा। इसीलिए अग्निपुराण में कहा गया है कि जो आराम (बर्गाचा) बनवाता है वह मनुष्य अधिक समय तक इन्द्र के नन्दन वन में निवास करने का अधिकारी होता है।

वेदों में पेड–पौधे जीव–जन्तु पशु–पक्षी एवं पर्यावरण को नुकसान पहुचाना निषेद्व है। इन सबकी सुरक्षा के लिए सकारात्मक निर्देश भी दिये गये है। अर्थवेद में कहा गया है कि द्विपाद (दो पैर वाले) और चतुष्पाद (चार पैर वाले) जीवों की हत्या न करो। इसी वेद में गाय, घोडें एवं मनुष्य एवं पेड–पौधों की सुरक्षा के लिए कहा गया है।

यजुर्वेद में जीव–जन्तु की हत्या दण्डनीय अपराध माना गया है। यजुर्वेद में पेड–पौधों को पवित्र माना गया है, एवं इन्हें धार्मिक अनुष्ठान शादी–विवाह एवं पैतृक कार्य में पवित्र स्थान दिया गया है। वैदिक व्यवस्थाकार पशु–पक्षी और वन्य प्रणियों के संरक्षण की बात पर्यावरण संवर्धन की जागरुकता पैदा करने के लिए करता है। साथ–साथ इनकी मानव जीवन के लिए उपयोगिता के परिप्रेक्ष्य में उल्लेख करता है, पेड–पौधे, वृक्ष–वनस्पति गाय के दूध औषधि आदि की प्रशंसा करने वाले सैकडों सूक्त वेदों में मिलते है।

ऋग्वेद के प्रणेता ऋषि मानव और जीव–जन्तुओं के साथ ही वनस्पति, पेड–पौधों में भी उसी एक सत्ता के विविध रुपों को देखते हैं। विश्वामित्र ने ऋग्वेद के सप्तम मंडल में देवताओं के साथ औषधियाँ और वृक्षों के लिए भी स्रोत कहे है कि इन्द्र, वरुण, मित्र, अग्नि जल औषधियां और वृक्ष हमारे इस स्रोत को सुने मरुतों के पास रहकर हम सुख से रहेंगे तुम सदा हमारी रक्षा करो।

वनस्पति एवं जीव जगत के साथ साहचर्य रखे, यही वैदिक साहित्य की विशेषता है। वैदिक कर्मकाण्डों की अनेक विधाओं ने भी पर्यावरण संरक्षण और सुरक्षा का दायित्य निभाया है। अरण्यों में रहकर पर्यावरण के प्रति विशेष जागरुक रहने वाले ऋषियों ने अरण्य साहित्य का सृजन कर विश्व में पर्यावरण के महत्व को रेखांकित किया है। अरण्य ब्राह्मण ग्रंथों एवं उपनिषदों के बीच की कडी है।

उपनिषदों में जल, वायु, पृथ्वी और अंतरिक्ष का विशद वर्णन हुआ है। इसमें प्रकति की महता को पर्याप्त मान्यता प्रदान की गई है। इनके अनुसार पदार्थ की उत्पत्ति एवं जीव–जगत की सृष्टि, अग्नि जल और पृथ्वी के विनियोग से हुई है। रामायणकाल में भी पर्यावरण संरक्षण एवं पर्यावरण के प्रति चेतना पर्याप्त सक्रिय थी, वाल्मीकि रामायण में राम के वन गमन के समय प्रकति के मनोरम दृश्य का उल्लेख किया गया है। इस समय पर्वत प्रदेश, घने–जंगल एवं सुरम्य नदियों के किनारे सारस और चक्रवाक पक्षी आनंद में विचर रहे थे। जंगलों जीव–जन्तु के झुण्ड, पशु–पक्षी जीव–जन्तु स्वच्छद रुप से विचरण करते हैं। अर्थात उन दिनों पर्यावरण अत्यन्त समृद्व था। रामायण कालीन ग्रंथों में प्रकति को सजीव व निर्जीव दोनो ही तत्वों से चेतना सम्पन्न बताया गया है। रामचरितमानस के उत्तरकांड में वर्णन मिलता है कि चारागाह, तालाब, हरित–भूमि, वन उपवन के सभी जीव आनंद पूर्वक रहते थे।

इसी तरह महाभारतकालीन मनीषियों ने भी पर्यावरण की गौरव महिमा मडित किया है। इस काल में भगवान कृष्ण ने गीता में प्रकृति को सृष्टि का उपादान कारण बताया गया है। श्रीकृष्ण कहते हैं प्रकति के कण–कण में सृष्टि का रचयिता समाया हुआ है। प्रकति के समस्त चमत्कारों को परमेश्वर का स्वरुप बताते हुए श्रीकृष्ण कहते हैं में ही पृथ्वी में प्रवेश करके सभी भूत–प्राणियों का धारण करता हूँ। महाभारत काल मे प्रत्येक तत्व को देवता सदृश्य स्वीकार कर उसकी प्रर्थना की जाती थी। उस समय वृक्षों की पूजा की जाती थी। वृक्षों को काटना महापाप समझा जाता था। वैदिक वांग्मय में दर्शन भी पर्यावरण की चेतना से भरा पडा है। सांख्य दर्शन में प्रकति और पुरुष के समन्वय को सृष्टि का कारण माना है। प्रकति जड़ एवं सथूल होते हुए भी अति सूक्ष्म है। अतः प्रकति समस्त सृष्टि की उत्पति का प्रमुख कारण है। न्यायदर्शन ईश्वर एवं जीव के साथ प्रकति का महत्वपूर्ण घटक है।

वास्तव में प्राचीन भारतीय वैदिक पंरम्परा में पर्यावरण संरक्षण समाया हुआ है। जो हमें जीवन की उस खुशहाली की ओर ले जाता है तथा '' सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः की भावना को उद्‌बोधित करता है, वर्तमान समय में भी भारतीय वैदिक मूल्यों को पुनः प्रतिष्ठित करने की है, ताकि हमारा समाज और हमारा पर्यावरण भावी पीढ़ी के लिए बना रहे। पृथ्वी पर जीवन बनाये रखने हेतु हमें अपने भारतीय चिन्तन के स्वरुप प्रकति से भावनात्मक, एकात्मक स्थापित करने वाले परम्परागत श्रद्वामय संस्कार एवं व्यवहार में लाने होंगे। तभी सम्पूर्ण पृथ्वी धरातल पर पर्यावरण का संरक्षण हो पायेगा। हमारा वर्तमान हमारे भविष्य की पीढ़ी के समुख ऐसे वातावरण को प्रस्तुत कर रहा है, जो आने वाले समय के लिए भयावह दृश्य दिखा रहा है। हमें पुनः अपनी वैदिक परंपरा जो कि पर्यावरण संरक्षण के लिए जानी जाती थी। उसी ओर लौटना होगा, तभी हमारा पर्यावरण संरक्षित रह पायेगा।

सन्दर्भ–

1. वैदिक साहित्य में पर्यावरण संरक्षण हेतु वनस्पति जन्तु संरक्षण की अवधारणा– डा0 राजेन्द्र कुमार पुरोहित
2. वैदिक साहित्य में प्रकति एवं पर्यावरण– प्रो0 आनन्द पुरोहित
3. वैदिक और लौकिक संस्कृत वाङ्मय में पर्यावरण– डॉ0 राजवीर सिंह
4. पर्यावरण विकास– राष्ट्रीय मासिक पत्रिका
5. वैदिक साहित्य में विचित पर्यावरण चेतना की प्रासंगिकता – डॉ0 तैफिक हुसैन